गेल डी० ए० वी० पब्लिक विद्यालय

विषय– हिन्दी

कक्षा– षष्ठी

कार्यपत्रक – 1 (2026–27)

पाठ –1 साथी हाथ बढाना

प्रश्न–1. नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए–
नेक –
सेहरा –
खातिर –
बोझ –
जर्रा –
प्रश्न –2. वर्तनी सही कर लिखिए–
आवीश्कार –
परिनाम –
अतिरीकत –
व्यक्ती –
अभीलाषा –
साधू –
प्रश्न –3. दो– दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–
पर्वत – ..... , ... ।
साथी – ....., ... ।
किस्मत – ....., ... ।
प्रश्न –4. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–
सत्य –
जड. –

आकाश –
प्रत्यक्ष –
चुस्त –
प्रश्न –5. दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग करिए–
1. अँगूठा दिखाना –
2. आँखें बन्द करना –
3. अक्ल का दुश्मन –
4. आग में घी डालना –
प्रश्न –6. नीचे दिए गए दो–दो शब्दों का इस प्रकार वाक्यों में प्रयोग कीजिए कि उनके अर्थ में अंतर स्पष्ट हो सके–
1. नियत –
नियति –
2. कर्म –
क्रम –
3. जलद –
जलज –
4. अपेक्षा –
उपेक्षा –
प्रश्न –7. 'परिश्रम के महत्त्व' पर 100– 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए–

गेल डी० ए० वी० पब्लिक विद्यालय

विषय– हिन्दी

कक्षा– षष्ठी

कार्यपत्रक – 2 (2026–27)

पाठ –2 चिट्ठी के अक्षर

प्रश्न–1.	नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए–
	दक्ष – हस्त – ठहरना – छुट्टी – नियत – अक्षर – अवरोध – मुश्किल – अथक – अथक – दृढ़ –
प्रश्न–2.	विशेषण–विशेष्य अलगकर लिखिए– विशेषण विशेष्य ➢ अथक परिश्रम – .... ➢ कठिन परिस्थिति– .... ➢ बत्तीस पेज – .... ➢ दूसरी कविता – .... ➢ बाहरी कमरे – ....
प्रश्न–3.	दिए गए अनुच्छेद से अनुस्वार और अनुनासिक शब्दों को छाँटकर लिखिए। एक बहुत सुंदर गाँव था। वहाँ एक छोटा बंदर मंगल रहता था। वह बहुत चंचल और हँसमुख था। एक दिन संध्या के समय वह आँगन में बैठा चाँद को निहार रहा था। चाँदनी चारों ओर फैली हुई थी। ठंडी मंद पवन बह रही थी। मंगल ने सोचा , कितना सुंदर चाँद है! काश, मैं इसके संग आकाश में उड. सकता। तभी उसकी संगिनी चंपा आई। उसने हँसकर कहा , ''मंगल तुम क्यों गुमसुम हो?'' मंगल ने कहा कि मैं चाँद

	के संग खेलने का सपना देख रहा हूँ। चंपा खिलखिलाई और बोली ,'' सपने देखना अच्छा है, परंतु हमें अपने काम पर भी ध्यान देना चाहिए।'' इतने में जंगल शंख–सी ध्वनि गूँजी। सब बंदर पेड़ों पर चढ.ने लगे। मंगल भी उनके साथ कूद–फाँद करने लगा। चाँदनी में चमकते उस वन में सब आनंद से झूम रहे थे। लेकिन सिंह अपनी माँद में ही बंद चुपचाप बैठा रहा। मंगल भी अपनी उमंग और तरंग में झूमता रहा। उस दिन से वह काम भी ध्यान से करने लगा। <u>अनुस्वार</u> <u>अनुनासिक</u>
प्रश्न–4.	रिक्तस्थान भरें– • जब किसी वर्ण को बोलते समय आवाज ..... दोनों से निकलती है तो उस वर्ण के ऊपर ..... लगाया जाता है। • चन्द्रबिन्दु को व्याकरण की भाषा में ..... कहा जाता है।
प्रश्न –5	नीचे दिए गए षब्दों में पाँचवें वर्ण के स्थान पर अनुस्वार चिह्न लगाकर पुनः लिखिए– डण्डा – कङ्घा – पञ्छी – सञ्ज्ञा – कञ्चन – अन्त – पन्थ –
प्रश्न –6	आपने वार्षिक परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किए हैं। इसकी जानकारी देते हुए अपने पिता को पत्र लिखिए।